© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रघुराज सिंह
शोध निर्देशक, प्राचार्य
देवेन्द्र यादव
शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रयागराज जनपद के सभी स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 छात्र–छात्राएं प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के अन्तर्गत आते हैं। न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन के द्वारा 150 स्ववित्तपोषित एवं 150 वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। श्री एस0पी0 आहलूवालिया द्वारा निर्मित ''शिक्षण अभिवृत्ति मापन हेतु सूची'' का प्रयोग किया गया। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये– वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति, स्ववित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक अनुकूल है। स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है। शहरी क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शिक्षण अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है।

की–वर्ड– स्ववित्तपोषित, वित्तीय सहायता, शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय, बी0एड0, प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण अभिवृत्ति

प्रस्तावना :

शिक्षा जगत में शिक्षक का स्थान सदैव सर्वोपरि रहा है। शिक्षक ही वस्तुतः राष्ट्र का निर्माता है जो ज्ञान, कौशल एवं व्यक्तित्व से राष्ट्र के भावी नागरिकों का निर्माण करता है। शिक्षक वह धुरी है जिसके चारो ओर शैक्षिक व्यवस्था घूमती है। राष्ट्रीय विकास के सन्दर्भ में कोठारी आयोग ने इस थ्य को इन शब्दों में स्वीकार किया है– ''इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शिक्षा स्तर और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं उसमें शिक्षक की गुणवत्ता–क्षमता और चरित्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।''

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही सक्रिय भागीदार होते हैं। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में छात्र ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते हैं। शिक्षक का प्रमुख दायित्व अपने छात्रों को शिक्षण प्रदान कर विषय विशेषा बनाना तथा उपयुक्त निर्देशन प्रदान करके देश के भविष्य निर्माण में सहायक होना है। शिक्षक प्रत्येक शिक्षण संस्था का अभिन्न अंग होता है और शैक्षिक संस्था की सफलता वहाँ के शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर करती है। शैक्षिक वातावरण में शिक्षक की भूमिका अहं होती है।

छात्राध्यापकों के शिक्षा तथा प्रशिक्षण में गुणात्मक व मात्रात्मक सुधार से अभिप्राय है उनकी शिक्षण अभिवृत्ति योग्यता तथा कौशल में वृद्धि। किसी भी वस्तु के प्रति अभिव्यक्ति उस वस्तु के सन्दर्भ में मानव व्यवहार का बहुत ही सक्षम निर्धारक होता है। यह एक संज्ञानात्मक, भावात्मक, कृतसंकल्पना है, जो कि उस वस्तु के प्रति वास्तविक गठन की प्रति क्रिया को बताता है। अभिवृत्ति का निर्माण उस वस्तु के प्रति जानकारी के आधार पर होता है।

अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति व्यवहार करने में प्रेरणा का स्रोत है। अभिवृत्ति के प्रभावों के अध्ययन का प्रयास किया जा सकता है। विश्वभर में समाजशास्त्री इस दिशा में ऐसे नवीन साधनों एवं तरीकों को खोजने में प्रयासरत हैं जिससे कि व्यक्ति के अभिवृत्ति में आवश्यक परिवर्तन लाया जाय और उसका उस वस्तु के साथ सु–समायोजन हो सके।

अभिवृत्तियों की महत्ता को बताते हुए **क्रैच एवं क्रचफील्ड (1959)** ने कहा कि **''अभिव्यक्ति को व्यक्ति के संसार के किसी अंग के प्रति प्रेरणात्मक, संवेगात्मक, प्रत्यक्षात्मक एवं ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के स्थायी संगठन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''**

वुडवर्थ (1956) के अनुसार ''अभिवृत्तियां मत, रूचियाँ, उद्देश्य की थोड़ी बहुत स्थायी प्रवृत्तियाँ हैं, जिनमें किसी प्रकार के पूर्व ज्ञान की प्रत्याशा और उचि प्रक्रिया की त्तपरता निहित है।''

अभिवृत्तियों का प्रसार असीमित है, यह वाह्य वस्तु के प्रतिपक्ष या विपक्ष में हमारी अभिव्यक्ति है। यह बहुत ही संतोष का विषय है कि शिक्षा के क्षेत्र में लोगों ने यह महसूस करना शुरू किया है कि कौशलों की जानकारी ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका शिक्षण वृत्ति के प्रति अनुकुल अभिवृत्ति का होना भी आवश्यकत है। यदि शिक्षण

वृत्ति के प्रति अनुकूल अभिवृत्तियाँ होगी तो शिक्षा दक्षता और कौशल किसी काम नहीं आ सकते हैं।

प्रभावी और दक्ष शिक्षण के लिये एक अच्छी प्रयोगशाला, पर्याप्त शिक्षण सामग्री, पुस्तकालय, इलेक्ट्रानिक साधन के साथ ही पर्याप्त निधि की आवश्यकता होती है, किन्तु इसमें महत्वपूर्ण : एक अच्छे अध्यापक की शिक्षण में रूचि। शिक्षा की गुणवत्ता अध्यापक की गुणवत्ता पर आधारित होती है। इसके लिए आवश्यक है कि उच्चकोटि के शिक्षकों का चयन किया जाये। उनकी व्यावसायिक तैयारी के लिए प्रशिक्षण की समुचित सुविधा होनी चाहिये।

बी0एड0 प्रशिक्षण द्वारा जितनी अधिक संख्या में छात्राध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है इसको देखते हुये हमारी रूचि एवं ध्यान स्वतः इस ओर आकर्षित हो जाता है। वर्तमान में प्रचलित दो प्रकार की बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थाएं (अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित) हैं। नई स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालयों की बढ़ती संख्या इसकी गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न लगा रही है, इसे देखते हुये प्रस्तुत समस्या पर एक शोध की अत्यन्त आवश्यकता है।

किसी भी व्यवसाय में सफल होने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति का उस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो, यदि किसी व्यवसाय में व्यक्ति की रूचि न हो या उसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण न रखता हो तथा विवशता के कारण हमें वही व्यवसाय करना पड़े तो वह न उस व्यवसाय के साथ न्याय कर सकेगा और न ही उस व्यवसाय में रहते हुये मानसिक शान्ति एवं संतुष्टि का ही अनुभव कर सकेगा।

शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का कार्य करता है। क्या स्ववित्तपोषित प्रशिक्षण महाविद्यालय इस कार्य को उतने ही प्रभावशाली ढंग से कर रहे हैं जितना कि वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालय? इसी मूल प्रश्न का उत्तर पाने हेतु वर्तमान शोध ''स्ववित्त पोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों अध्ययनरत बी0एड0 छात्र–छात्राओं की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन'' शीर्षक के अन्तर्गत चुना गया है।

समस्या कथन–

''स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति की तुलना करना।
2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का उनके लैंगिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की

शिक्षण अभिवृत्ति का उनके महाविद्यालय के ग्रामीण एवं शहरी स्थिति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

परिकल्पनायें :

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के परीक्षण के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
3. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रयागराज जनपद के सभी स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 छात्र–छात्राएं प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के अन्तर्गत आते हैं। न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन के द्वारा 150 स्ववित्तपोषित एवं 150 वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। श्री एस0पी0 आहलूवालिया द्वारा निर्मित ''शिक्षण अभिवृत्ति मापन हेतु सूची'' का प्रयोग किया गया। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1 : स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

तालिका– 1

शिक्षण अभिवृत्ति

क्रम सं0	शिक्षण अभिवृत्ति के विभिन्न आयाम	स्ववित्तपोषित N = 150		वित्तीय सहायता N = 150		t	सार्थकता स्तर
		M	SD	M	SD		
1.	शिक्षण अभिवृत्ति	247.78	37.34	259.22	23.86	1.99	.05
2.	अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी	43.53	7.17	44.55	5.93	0.85	असार्थक

3.	कक्षा अध्यापन सम्बन्धी	41.70	7.86	43.95	4.74	1.90	असार्थक
4.	छात्र केन्द्रित व्यवहार सम्बन्धी	43.86	7.10	44.90	5.75	0.88	असार्थक
5.	शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी	40.88	8.10	42.63	6.69	1.29	असार्थक
6.	छात्रों से सम्बन्धी	37.71	7.13	40.37	5.88	2.20	0.05
7.	अध्यापकों से सम्बन्धी	40.08	7.56	42.30	6.00	1.79	असार्थक

तालिका सं0–1 में व्यक्त सांख्यिकीय मान परिकल्पना 1 से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों (बी0एड्0) में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन का उल्लेख है।

शिक्षण अभिवृत्ति आयाम के अन्तर्गत प्रश्नगत सारणी से अन्तर 11.44 वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण (बी0एड्0) महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है।

वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 1.99 के रूप में प्राप्त होती है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.05 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

स्पष्टतयः यह अवलोकन संयोगजन्य नहीं है। सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.05 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 प्रशिक्षणार्थियों की स्ववित्तपोषित बी0एड्0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शिक्षण अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है।

1. अध्यापन व्यवसाय विषयक आयाम के अन्तर्गत प्रश्नगत तालिका से 1.02 का अन्तर वित्तीय सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में द्रष्टव्य है।

वास्तविक के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 0.85 के रूप में प्राप्त होती है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में किसी भी प्रतिशत स्तर पर सार्थक नहीं है।

स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

2. कक्षा अध्यापन सम्बन्धी आयाम के अन्तर्गत प्रश्नगत सारणी से 2.25 का अन्तर स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है।

वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 1.90 के रूप में प्राप्त हुआ। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के परिप्रेक्ष्य में किसी स्तर पर सार्थक नहीं है।

स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे

निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 प्रशिक्षणार्थियों की कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

3. छात्र केन्द्रित व्यवहार सम्बन्धी आयाम के अन्तर्गत प्रश्नगत तालिका से 1.04 का अन्तर स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है।

वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 0.88 के रूप में प्राप्त होता है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के परिप्रेक्ष्य में किसी स्तर पर सार्थक नहीं है।

स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की छात्र केन्द्रित व्यवहार सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

4. शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी आयाम के अन्तर्गत तालिका से 1.75 का अन्तर स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है।

वास्तवविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 1.29 के रूप में प्राप्त होता है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है।

स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

5. छात्रों से सम्बन्धित आयाम के अन्तर्गत प्रश्नगत तालिका से 2.61 का अन्तर स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है।

वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 2.20 के रूप में प्राप्त होता है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.05 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

परिकल्पना– 2 : स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

तालिका– 2

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में लैंगिक दृष्टि से शिक्षण अभिवृत्ति

लैंगिक दृष्टि (लिंग)	N	M	SD	t	सार्थक स्तर
पुरुष	250	253.66	24.69	0.06	असार्थक
महिला	250	253.33	35.62		

तालिका 2 में व्यक्त सांख्यिकीय मान परिकल्पना–2 से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में लैंगिक दृष्टि से शिक्षण अभिवृत्ति का उल्लेख है। शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तर्गत प्रश्नगत तालिका से अन्तर 0.33 स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में लैंगिक दृष्टि से दृष्टव्य है। वास्तविक के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 0.06 के रूप में प्राप्त होता है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में किसी भी प्रतिशत स्तर पर सार्थक नहीं है। स्पष्टतः यह अन्तर संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना स्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष यह निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में लैंगिक दृष्टि से शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

परिकल्पना–3 : स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

तालिका– 3

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति।

क्षेत्र	N	M	SD	t	सार्थक स्तर
ग्रामीण	250	248.51	24.79	3.18	0.05 पर सार्थक
शहरी	250	262.84	15.56		

तालिका– 3 में व्यक्त सांख्यिकीय मान परिकल्पना–4 से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का उल्लेख है। शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तर्गत प्रश्नगत तालिका से 14.33 का अन्तर, स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त ग्रामीण एवं शहरी बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों में दृष्टव्य है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 3.18 के रूप में प्राप्त होता है। क्रान्तिक अनुपात का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.05 एवं 0.01 दोनों प्रतिशत स्तर पर सार्थक है। स्पष्टतः यह परिणाम संयोगजन्य नहीं है। सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत है। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शिक्षण अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है।

निष्कर्ष–

परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वह इस प्रकार हैं–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

अतः वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति, स्ववित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक अनुकूल है।

1.1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन (शिक्षण) व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

1.2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

1.3. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की छात्र केन्द्रित व्यवहार सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

1.4. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

1.5. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की छात्रों से सम्बन्धित अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

अतः वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की छात्रों से सम्बन्धित

अभिवृत्ति, स्ववित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालय में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक अनुकूल है।

1.6. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापक से सम्बन्धित अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।

3. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

अतः शहरी क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की ग्रामीण क्षेत्र के बी0एड्0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शिक्षण अभिवृत्ति अधिक अनुकूल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमार, संजय एवं बाला, अन्जू (2017). उत्तर प्रदेश राज्य के सेवारत प्राईमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजुकेशन एण्ड रिसर्च*, वॉ0 2, इश्शू–5, पृ0 76–79
- चौधरी, रीता एवं कुमार, संजय (2017). हरियाणा राज्य के सेवारत प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा समस्याओं का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजुकेशन एण्ड रिसर्च*, वॉ0 3, इश्शू–2, पृ0 35–38
- तिवारी, कमला पति (2017). संस्कृत शिक्षक तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट*, वॉ0 2, इश्शू–5, पृ0 728–732
- दादू, प्रतिभा (2016). "ग्रामीण एवं शहरी पुरूष एवं महिलाओं के व्यक्तित्व, मूल्य एवं धार्मिक अभिवृत्ति का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन" *इन्टरनेशनल एजुकेशन एण्ड रिसर्च जर्नल*, वॉल्यूम– 3, इश्यू–5।
- पटलवार, सुहासिनी (2010), बी0एड0 एवं डी0एड0 प्रशिक्षार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध सारांश संकलन, *राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद*, रायपुर, छत्तीसगढ़
- प्यारी, आनन्द एवं राजश्री (2012). शिक्षण–अधिगम सहभागिता, *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी*, वॉ0 2(1), पृ0 109–117

- पाण्डेय, अरूण कुमार (2014). प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा कक्षा–शिक्षण व्यवहार का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च,* वॉ0 1, इश्शू–1, पृ0 56–70
- पाण्डेय, नीरा (2018). उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के सृजनात्मक अधिगम एवं शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन, *शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,* वॉ0 6, इश्शू–4, पृ0 124–127